Platinum Jubilee Assam Medical College

Medical education took its nascent steps in North East India with the establishment of Berry White School of Medicine, Dibrugarh in 1900. Dr John Berry White was a great philanthropist who left his will, donating his entire life savings of Rs 50,000 towards the institution which produced LMP (Licentiate Medical Practitioner) doctors until before India gained independence.

When the need of having a full-fledged medical college arose in Assam after independence, the seed sown by John Berry White ensured that Dibrugarh had the first claim to the effect. Public meetings were held and citizen groups constituted to rally for a medical college in Dibrugarh.

Assam Medical College, as we know today started functioning from the abandoned military base hospital of US army in the 2nd World War in the Barbari area of Dibrugarh. First batch of MBBS in the year 1947 had 57 students.

The pioneers who were instrumental in the establishment of Assam Medical College in Dibrugarh were Lokapriya Gopinath Bordoloi, Chief Minister, Ram Nath Das, Health Minister, Dr Bhubaneswar Borooah and others. Dr Hem Chandra Baruah was the founder principal of the college.

At present Assam Medical College boasts of an annual intake of 200 MBBS seats and 217 Post graduate seats. Till date 9,172 MBBS graduates have qualified from its portals, are flying the flag of their alma mater high, shining in patient care, research as well as extra-curricular activities.

The college has 28 full-fledged departments, which includes 8 (eight) super speciality departments. Whereas post graduate courses were recognized by the then MCI during the 1960s itself, the NMC has also given the green signal to DM and MCh courses in 3 (three) super speciality departments during this platinum jubilee year of the institute.

28th April 2022 was a red letter day in the annals of Assam Medical College, with the visit of honourable Prime Minister Shri Narendra Modi. It witnessed the dawn of a new beginning in cancer care with the inauguration of the state of the art cancer hospital with in the premises of the college.

Assam Medical College has always had a very strong research foundation. It was the pioneer in establishing the model rural health research unit (MRHRU) and multidisciplinary research unit (MRU). These projects have given the much needed impetus to both community based and laboratory based research work.

The college has 345 faculty in its rolls. About 375 nursing staff, 300 grade 3 and 500 grade 4 employees act as support system for various medical services offered by the college. The average daily outdoor attendance is 1,239 and the total indoor bed capacity is 1,365. It is the nodal centre for many national health programs, referral centre for more than 5 upper Assam districts as well as nearby states of Arunachal Pradesh and Nagaland. Essentially, it provides universal health coverage to greater part of north eastern India.

There are many allied institutes within its campus of the college, offering degree, diploma and certificate courses. Some of these are in Dentistry, Pharmacy, Nursing (BSc, GNM, ANM) and Paramedical sciences.

Assam Medical College being a residential campus, provides for accommodation of both boys and girls. There are 11 undergraduate hostels and 6 post graduate hostels with in-house kitchen and dining facilities.

Assam Medical College has produced innumerable gems who have gone on to become stalwarts in their fields of expertise. As it steps into the platinum jubilee of fruitful existence, it will continue to be a beacon of hope and care throughout the whole world.

Department of Posts is pleased to issue Commemorative Postage Stamp on 75 Years of Assam Medical College and appreciate its contribution of providing quality medical services to the entire North East India.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure	:	Smt. Vinita Sinha
Cancellation Cachet	:	Smt. Nenu Gupta
Text	:	Based on information received from the proponent

डाक विभाग

DEPARTMENT OF POSTS

Dr.John Berry White
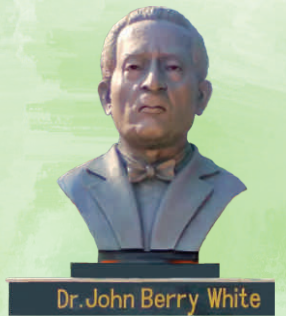
विवरणिका BROCHURE

प्लैटिनम जयंती असम मेडिकल कॉलेज

पूर्वोत्तर भारत में मेडिकल शिक्षा की शुरुआत वर्ष 1900 में बैरी व्हाइट स्कूल ऑफ मेडिसिन, डिब्रूगढ़ की स्थापना से हुई। डॉक्टर जॉन बैरी व्हाइट एक महान समाज–सेवी थे, जिन्होंने अपने संपूर्ण जीवन की कुल 50,000/– रु. की जमापूंजी एक ऐसे संस्थान को दान कर दी, जो भारत के स्वतंत्र होने से पहले से एलएमपी (लाइसेंस प्राप्त मेडिकल प्रैक्टिशनर) चिकित्सकों की शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत था।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात जब असम में एक संपूर्ण मेडिकल कॉलेज खोलने की आवश्यकता महसूस हुई, तो जॉन बैरी व्हाइट द्वारा मेडिकल शिक्षा के क्षेत्र में किए गए सूत्रपात ने यह सुनिश्चित कर दिया कि इसके लिए डिब्रूगढ़ का दावा सबसे प्रबल है। डिब्रूगढ़ में मेडिकल कॉलेज बनाने के स्वप्न को साकार करने के उद्देश्य से जनसभाएं आयोजित की गईं और अनेक नागरिक समूहों का गठन किया गया।

वर्तमान असम मेडिकल कॉलेज की शुरुआत डिब्रूगढ़ के बरबारी इलाके में स्थित एक मिलिट्री बेस अस्पताल से हुई, जिसका प्रयोग द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अमेरिकी सेना द्वारा किया गया था। इस कॉलेज के एमबीबीएस के प्रथम बैच (वर्ष 1947) में 57 छात्र थे।

डिब्रूगढ़ में असम मेडिकल कॉलेज की स्थापना में अग्रणी भूमिका निभाने वालों में असम के मुख्यमंत्री, लोकप्रिय गोपीनाथ बोरदोलोई, स्वास्थ्य मंत्री, राम नाथ दास, डॉक्टर भुवनेश्वर बरुआ एवं अन्य का नाम शामिल है। डॉक्टर हेम चंद्र बरुआ, इस कॉलेज के संस्थापक प्रधानाचार्य थे।

वर्तमान में असम मेडिकल कॉलेज में प्रतिवर्ष एमबीबीएस के लिए 200 और स्नातकोत्तर के लिए 217 छात्र प्रवेश लेते हैं। अब तक, इस संस्था से कुल 9,172 एमबीबीएस ग्रेजुएट पास हुए हैं, जो चिकित्सा और अनुसंधान कार्य के साथ–साथ पाठ्येतर–कार्यकलापों में भी अपने संस्थान का नाम रोशन कर रहे हैं।

असम मेडिकल कॉलेज में समस्त सुविधाओं से युक्त 28 विभाग हैं, जिनमें 8 (आठ) सुपर स्पेशलिटी विभाग हैं। यद्यपि इस कॉलेज के पोस्टग्रेजुएट (स्नातकोत्तर) पाठ्यक्रम को 1960 के दशक के दौरान ही एमसीआई द्वारा मान्यता प्रदान कर दी गयी थी, वहीं इसके 3 (तीन) सुपर स्पेशलिटी विभागों में डीएम और एमसीएच पाठ्यक्रम को एनएमसी द्वारा इस संस्थान के प्लैटिनम जयंती वर्ष में मान्यता प्रदान की गई है।

असम मेडिकल कॉलेज के इतिहास में 28 अप्रैल, 2022 का दिन अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस दिन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने इस कॉलेज का दौरा किया और कॉलेज के परिसर में, कैंसर के रोगियों के लिए आशा की एक नई किरण के रूप में, अत्याधुनिक कैंसर अस्पताल का उद्घाटन किया।

असम मेडिकल कॉलेज अनुसंधान के क्षेत्र में सदैव अग्रणी रहा है। इस कॉलेज ने मॉडल ग्रामीण स्वास्थ्य अनुसंधान यूनिट (एमआरएचआरयू) और बहु–विषयक अनुसंधान यूनिट (एमआरयू) स्थापित करने में अग्रणी भूमिका निभाई है। इन परियोजनाओं ने समुदायिक और प्रयोगशाला आधारित अनुसंधान कार्यों पर प्रमुख रूप से ध्यान केंद्रित किया है।

इस कॉलेज में कुल 345 प्राध्यापक हैं। साथ ही, कॉलेज द्वारा प्रदान की जा रही विभिन्न मेडिकल सेवाओं के लिए सपोर्ट स्टाफ के रूप में लगभग 375 नर्सिंग स्टाफ और ग्रेड 3 के 300 और ग्रेड 4 के 500 कर्मचारी भी हैं। दैनिक बाह्य रोगियों की औसत संख्या 1,239 है और इंडोर रोगियों के लिए कुल 1,365 बेड हैं। यह कॉलेज, अनेक राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों के लिए नोडल केंद्र तथा ऊपरी असम के 5 से अधिक जिलों के साथ–साथ निकटवर्ती अरुणाचल और नगालैंड राज्यों के लिए रेफरल केंद्र भी है। वास्तव में, यह कॉलेज पूर्वोत्तर भारत के अधिकतर भाग के लिए समग्र स्वास्थ्य सेवाएं भी प्रदान करता है।

इस कॉलेज के परिसर में अनेक संबद्ध संस्थान भी हैं, जो डिग्री, डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कोर्स करवाते हैं। ये संबद्ध संस्थान, दंत चिकित्सा, फार्मेसी, नर्सिंग (बीएससी, जीएनएम, एएनएम) और पैरामेडिकल साइंस आदि से संबद्धित हैं।

असम मेडिकल कॉलेज एक आवासीय कैंपस है, जिसमें छात्र एवं छात्राओं दोनों के लिए आवासीय व्यवस्था है। इस कॉलेज में स्नातक पाठ्यक्रम छात्रों के लिए 11 और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के छात्रों के लिए 6 होस्टल हैं, जिनके अन्दर ही किचन और डाइनिंग की सुविधा भी उपलब्ध है।

असम मेडिकल कॉलेज ने अनेक ऐसे प्रख्यात चिकित्सक दिए हैं, जो आगे चलकर अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्र में पुरोधा सिद्ध हुए हैं। अपनी स्थापना के प्लैटिनम जयंती वर्ष में प्रवेश कर रहा यह कॉलेज, आज भी स्वास्थ्य के क्षेत्र में विश्वभर के लिए आशा की किरण के रूप में कार्य कर रहा है।

डाक विभाग, समस्त पूर्वोतर भारत को श्रेष्ठ मेडिकल सेवाएं प्रदान करवाने की दिशा में असम मेडिकल कॉलेज के महत्वपूर्ण योगदान को रेखांकित करते हुए इसकी स्थापना के 75 वर्ष पूरे होने के अवसर पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :

डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरा/विवरणिका	: श्रीमती विनीता सिन्हा
विरूपण कैशे	: श्रीमती नीनू गुप्ता
पाठ	: प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्य	: 500 पैसे
Denomination	: 500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	: 211600
Stamps Printed	: 211600
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य ₹ 5.00